International Journal of Applied Research 2016; 2(3):488-489

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR2016; 2(3): 488-489
www.allresearchjournal.com
Received: 23-04-2016
Accepted: 27-05-2016

डॉ0 आभा त्यागी
प्राचार्या वैश्य कन्या महाविधालय
समालखा (पानीपत) हरियाणा, भारत

Correspondence
डॉ0 आभा त्यागी
प्राचार्या वैश्य कन्या महाविधालय
समालखा (पानीपत) हरियाणा, भारत

मध्ययुगीन राजस्थान में सामन्ती व्यवस्था

डॉ0 आभा त्यागी

राजनीतिक इतिहास के स्तर पर राजपूतों के प्रारंभिक इतिहास का पुर्नगठन एक ऐसे स्वरूप का अनुसरण करता है जिसे 'वशीकरण' की संज्ञा दी गई है। विभिन्न प्रकार की ऐतिहासिक विशुद्ध साहित्यिक रचनाओं में राजपूतो के सैनिक एवं शौर्यपूर्ण गुंणो को बार-बार प्रस्तुत किया ''जो राजपूत अपने शौर्य से मध्ययुगीन भारतीय इतिहास को गौरव प्रदान करते हैं वे वैदिक आर्यो के वंशज के अतिरिक्त और कोई हो ही नही सकते वैदिक आर्यो के अलावा कोई भी अपने पूर्वजो के धर्म की रक्षा के लिए इतनी वीरतापूर्वक नही लड़ सकता था।

''स्वेच्छापूर्वक राष्ट्र और उसके लोगों एवं संस्कृति की रक्षा के लिए क्षत्रियों के कर्तव्य का भार अपने कंधों पर ले लिया'' यदि 'राजपुत्रों' के पूर्व मध्ययुगीन एवं मध्ययुगीन उल्लेखो पर नजर डाली जाए तो एक मिश्रित जाति'' का प्रतिनिधित्व करते है और जागीरो के छोट-छोटे मुखियों का एक पर्याप्त विस्तृत अंश थे'' कम से कम राजपूत शक्ति के ढृढीकरण के आरम्भिक चरणो मे किसी विशिष्ट कुल का समकालीन स्तर ही उसका राजपूत कुलों मे सम्मिलित होने का आधार प्रस्तुत करता था।

उतर मध्यकालीन राजस्थान के जन जीवन मे सामन्ती प्रथा का एक विशिष्ट स्थान रहा है राजस्थान के राजपूती राज्य मे सामंत व्यवस्था का उद्भव वहॉ के शासकों की कुलीन परम्परा से हुआ था राज्य केवल शासक की सम्पति नही अपितु कुलीय सामन्तों की सामूहिक धरोहर माना जाता था। राज्य की स्थापना के साथ ही सामन्तों का अस्तित्व आरम्भ हो गया था। वे सभी अपने को इसका भागीदार समझते थे उनकी दृष्टि मे राजा के साथ संबंध बंधुत्व व रक्त का था। स्वामी एवं सेवक का नही। सामन्त धरेलु ओर राजनीतिक सभी मामलो मे सामाजिक समानता का दावा करते थे जोधपुर के महाराजा मानसिंह के काल मे बहुत से सांमतो को अपनी जागीरों से निष्कासित कर दिया गया था। वे पडौसी राज्यों मे बैठे रहे। अंग्रेजी रेजिडेन्ट को उन्होने अपनी जागीर दिलवाने के लिए जो प्रार्थना पत्र भेजा था उसमे उन्होने स्पष्ट रूप से उल्लेख दिया कि राजा मानसिंह और हम सब एक ही राठौड राजा के वंशज है। जब राजा हमारी सेवाऍ स्वीकार करता है तो वह हमारा स्वामी है अन्यथा हम सभी उसके भाई-बंधु है अतः मारवाड भूमि पर हमारा समान अधिकार है उन्होने आगे लिखा है ''महाराज मानसिंह के पूर्वज पीढी दर पीढ़ी मारवाड मे शासन करते आये है और हमारे पूर्वज उनकी मंत्री तथा सलाहकार के रूप में रहे है। राज्य के सभी महत्वपूर्ण कार्य सामन्तो की सामूहिक कार्यवाही द्वारा ही सम्पन्न होते है।''

सामन्त कई खापों मे विभाजित थे प्रत्येक खाप का एक मुखिया या पाटवी होता था। स्वकुलीन सामन्त जो रावत राव, रावत राजा जैसी सम्मान सूचक पदवियॉ धारण करते थे सामान्यतः वे ठाकुर कहलाते थे ठाकुर अपने उपसामन्तो की मदद से अपनी जागीर मे शांति व सुव्यवस्था कायम रखने सम्बन्धी कर्तव्यों का पालन करता था।

राजस्थान के राज्यो मे स्वकुलीय सामन्तो के अतिरिक्त अन्य समकक्ष राजपूत सामन्त भी होते थे उनका राजा के साथ स्वामी और सेवक का सम्बन्ध होता था ऐसे सामन्तो का अस्तित्व व सम्मान राजा की कृपा पर ही निर्भर करता था ऐसी स्थिति मे इन सामन्तो का राजा के प्रति वफादार रहना स्वाभाविक था'' मारवाड के भाटी, तॅवर, चौहान, जाडेचा, आदि इस श्रेणी के सामन्त थे। समकक्ष राजपूत सामन्तों के राजकीय कुल से शादी सम्बन्ध भी होते थे ऐसे सामन्तो को गनायत के नाम से संबधित किया जाता था। कुछ परदेसी राजपूतो ने अपनी विशिष्ट सेवाओ के लिए विभिन्न राज्यों मे सामन्त पद प्राप्त कर लिया था उदाहरण के रूप में मेवाड के झाला राठौड़, परमार आदि सामन्तों का उल्लेख किया जा सकता है ऐसे समकक्ष राजपूत सामन्तों के कारण राज्य मे शान्ति सुरक्षा भी बनी रहती थी।'' प्रतिहारो की शासन प्रणाली मे उप सामन्तीकरण के भी कई उदाहरण प्राप्त है। राजस्थान के प्रायः सभी राजवंशो के शासक अपने-अपने सामन्तों और पदाधिकारियो का उनकी सेवाओ के बदले मे अनुदान स्वरूप गॉव दे दिया करते थे सामन्ती श्रेणियो का विस्तृत वर्णन हमे 12वीं शती की कृति मानसार मे मिलता है।

राजस्थानी सामन्ती प्रथा व यूरोपीय सामन्ती प्रथा मे अनेक अन्तर स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होते है। टॉड व गिणन प्रभृति विद्वानों ने स्वीकार किया कि यूरोपीय सामन्ती प्रथा का जन्म बर्बरतापूर्ण वातावरण के फलस्वरूप हुआ। स्थानीय बन्धन की रक्षा का दायित्व सामन्तो पर डाला गया उसका सम्बन्ध स्वामी और सेवक का था। राजस्थान में सामन्ती व्यवस्था के अभ्युदय के लिए ऐसी परिस्थितियॉ नही थी राज्य और सामन्त का सम्बन्ध रक्त व बन्धुत्व का था इसलिए प्रत्येक सामन्त राज्य मे अपने अधिकार का दावा करता था और वे राजा को अपना नेता मानते थे

यूरोप मे सामन्त भूस्वामी के रूप मे था और उसके व्यापक अधिकार प्राप्त थे जबकि राजस्थान मे इसके विपरीत सामन्त को राजकुल का सदस्य होने के नाते भूमि का उपयोग करने का अधिकार प्राप्त था।

राजस्थान मे सामान्यतः न्याय का कार्य ग्राम पंचायत के हाथ मे था राजस्थान मे 19वी शताब्दी मे कुछ सामन्तो को न्याय सम्बन्धी अधिकार मिले थे वे भी आंशिक रूप में ही। राज्स्थान मे सामन्ती प्रथा का विकास सामाजिक नैतिक कारणों से हुआ राजनीतिक आवश्यकता के कारण से नहीं।

राजस्थान के राजपूत राज्यों मे कुलीन सामन्त प्रारंभ से ही बडे शक्तिशाली थे। राज्य के कार्यो की व्यवस्था और प्रबन्ध मे उनकी साझेदारी रहती थी उतराधिकारी के मामले मे भी सामन्तो का दखल रहता था। मारवाड के सामन्त शक्तिशाली थे कि इन्होने शासकों के निर्णयो के विरूद्ध भी कदम उठाया था राजस्थान के राज्यों मे कुल क्षेत्र का लगभग 80 प्रतिशत भू-भाग स्वकुलीय था अधीनस्थ सामन्तों के अधिकार में था। राज्य के उपजाऊ भाग पर भी इनका स्वामित्व था राजाओ और सामन्तों के परस्पर विरोधी हितों के फलस्वरूप यदा-कदा उनके बीच आपसी मतभेद होना स्वाभाविक था। सामन्त लोग राज्य मे स्वकुलीय व्यवस्था को अक्षुण्ण रखने के पक्ष मे थे जबकि शासक अपनी शक्ति व प्रतिष्ठा को बढ़ाने के लिए प्रयत्नशील थे। वे सामन्ती व्यवस्था को शासकीय नेतृत्व के अधीन संगठित करना चाहते थे।

राजस्थान में मुगलो का अधिपत्य हो जाने पर राजपूत राज्यों की सामन्त व्यवस्था मे परिवर्तन आने लगा। अब सामन्तो का अपने राजाओं के साथ भाई बंधु का ना रहकर स्वामी ओर सेंवक का होने लगा। मेवाड ने मुगलो का प्रभुत्व स्वीकार नही किया और राणा प्रताप व उसके उतराधिकारी मुगलों से निरन्तर युद्ध करते रहे मेवाड केन्द्र युद्ध काल मे राणा की शक्ति का आधार सामन्त ही थे। मेवाड़ के अतिरिक्त अन्य सभी राज्यों के सामन्तो की शक्ति कम हो गई यदि सामन्त सिर उठाता तो राजा मुगल सेना की मदद से उसे कुचल देने की स्थिति मे था। मारवाड़ के मोटा राजा उदयसिंह ने अकबर का प्रभुत्व स्वीकार कर लिया था उसने सभी, सामन्तों को दंड दिया धीरे-धीरे सामन्त पूर्ण रूप में राजाओ के आश्रित होने लगे।

सामन्तों की आश्रित स्थिति मे धीरे-धीरे उनपर विभिन्न प्रकार के प्रतिबन्ध लगा दिये गये थ। 1755 ई0 में महाराजा विजयसिंह ने सामन्तों से एक हजार की आमदनी पर तीन सौ रूपये के दर से 'मतालबा' नामक कर लेना आरम्भ कर दिया। ऐसी स्थिति मे राजा सामन्तों के बीच तनाव उत्पन्न होना स्वाभाविक ही था। अंग्रेजो के सम्पर्क में आने पर ही इस सम्बन्ध मे निश्चित नियम बन सके।

मुगल सत्ता स्थापित हो जाने के पश्चात राजपूत शासको और उनके सामन्तों के आपसी सम्बन्धों मे महत्वपूर्ण परिवर्तन आया। अब राजस्थानी शासक अपने सामन्तों की शक्ति की अपेक्षा मुगल सम्राट पर अधिक निर्भर हो गये अतः सामन्तों का अपने राज्य मे महत्व कम हो गया राजाओं ने मुगल सम्राट का अनुकरण करते हुए सामन्तो को नियन्त्रित करने के प्रयास किये। उतर मध्यकालीन राजस्थान मे सामन्त वाद का रूप भी स्पष्ट हो जाता है और यूरोपीय सामन्त वाद से उसका अन्तर भी। ''

सन्दर्भ सूचीं

1. सी.बी.वैध हिस्ट्री ऑफ मिडीवल हिंदू इंडिया खंड 2 अली हिस्ट्री ऑफ राजपूत्स (750-1000) ए.डी. पूना 1924।
2. डी.शर्मा (संपा) (राजस्थान थ्रू दि ऐजेज, खंड 1) पृष्ठ 106।
3. बी.एन.एस यादव, सोसायटी एंड कल्चर इन नोर्दर्न इंडिया इन दि टवेल्थ सेन्चुरी(इलाहाबाद 1973) पृष्ठ 37।
4. 12वी शताब्दी की कृति 'अपराजितपृच्छा।
5. कर्नल टाड द्वारा अनूदित पृ0 159-60, भाग-1, ए.सी बनर्जी, राजपूत स्टडीज पृष्ठ 134-35।
6. कर्नल टॉड द्वारा अनुदित पृष्ठ 159-60 पर उद्धृत ए.सी. बनर्जी पृ0 134-35।
7. टॉड, भाग-1 पृ0 127 आर.पी.व्यास मारवाड में सामन्ती प्रथा, परम्परा पृ0 79।
8. आर.पी. व्यास पृ0 7-8 जी एस.एल देवड़ा राजस्थान की प्रशासनिक व्यवस्था पृ0 72-73।
9. पी.सरन् स्टडीज इन मैडीवल इण्डियन हिस्ट्री मे प्रकाशित लेख दि फयुडल सिस्टम ऑफ राजपूताना' पृ0 3-21।
10. देवड़ा पृ0 50।
11. हरदयाल, मारवाड का इतिहास, भाग-2, पृष्ठ 627।
12. असोपा, आसोप का इतिहास पृ0 218।